लोकायुक्त ने सरपंच को रिश्वत लेते किया गिरफ्तार

▶ पन्ना में पहली बार हुई सरपंच पर कार्रवाई

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, पन्ना जिले मे त्रिस्तरीय पंचायती राज मे भ्रष्टाचार परवान चढ़ चुका है नीचे से ऊपर तक बिना लेन देन कोई कार्य नहीं हो रहा है। एक ऐसा ही मामला प्रकाश मे आया है जिसमें संभवत: पन्ना जिले का पहला मामला है जहां किसी सरपंच को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है।

हासिल जानकारी के अनुसार लोकायुक्त पुलिस संभाग सागर ने आज ग्राम पंचायत चैपरा के सरपंच को 5,000 की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों दबोचा है। आवेदक

नंदलाल राठौर (निवासी ग्राम चैपरा) ने अपनी एक हेक्टेयर कृषि भूमि पर सिंचाई की सुविधा के लिए कपिलधारा योजना के तहत कूप निर्माण हेतु आवेदन किया था।

कूप निर्माण की स्वीकृति जनपद पंचायत शाहनगर से मिल चुकी थी और इसका कार्य मनरेगा के तहत होना था। हितग्राही का आरोप है कि जब उसने कार्य शुरू करने के लिए ग्राम पंचायत चैपरा के सरपंच जगत आदिवासी से संपर्क किया, तो सरपंच ने कार्य शुरू करने की अनुमति देने के बदले 11,000 रुपये की रिश्वत मांगी थी। सरपंच द्वारा रिश्वत मांगे जाने की शिकायत नंदलाल राठौर ने पुलिस अधीक्षक लोकायुक्त सागर से की थी। शिकायत के सत्यापन के बाद योजनाबद्ध तरीके से आज जैसे ही आवेदक ने सरपंच जगत आदिवासी को रिश्वत की पहली किस्त के रूप में 5,000 सौंपे, पहले से तैनात लोकायुक्त की टीम ने उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया।

घटना के बाद पूरे जनपद कार्यालय में हड़कंप के हालात हो गये और जनपद में पदस्थ कर्मचारी इधर-उधर भागते नजर आए फिलहाल लोकायुक्त पुलिस की कार्यवाही जारी है। इस कार्यवाही में निरीक्षक कमल सिंह उइके, निरीक्षक रंजीत सिंह एवं लोकायुक्त सागर का स्टाफ मौजूद रहा।

गौवंश की तस्करी करने वाले 4 आरोपी गिरफ्तार

थाना देवेंद्रनगर अंतर्गत अमचूई जंगल मार्ग गढ़ीपड़रिया का मामला

नवभारत न्यूज

देवेंद्रनगर/पन्ना 25 फरवरी, पन्ना पुलिस अधीक्षक निवेदिता नायडू के निर्देशन में थाना देवेंद्रनगर अंतर्गत दिनांक 12-13 फरवरी की रात्रि को अमचूई जंगल मार्ग गढ़ीपडरिया मोड के आगे एक कंटेनर ट्रक में गोवंश को भरकर अवैध रूप से परिवहन किया जा रहा था।

थाना प्रभारी देवेंद्रनगर संतोष सिंह यादव द्वारा गोवंश के अवैध परिवहन के विरुद्ध कार्यवाही की गई एवं इस घटना में शामिल फरार 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया हैं। जिनके नाम शमशेर फकीर पिता पप्पू मुसलमान उम्र 32 साल निवासी ग्राम इमलिया बाग

खेलदार चैकी आबूनगर थाना कोतवाली फतेहपुर जिला फतेहपुर उत्तर प्रदेश, ख्वाजा मोहम्मद उर्फ रावबजिया पिता सावरिया बंजारा उम्र 52 साल निवासी मंडी भास्कर गंज थाना जलालाबाद जिला शामली उत्तर प्रदेश, फरीद उर्फ आरिफ अहमद पिता मोहम्मद इकबाल उम्र 41 साल निवासी बिन्नी बस स्टॉप चैकी आबूनगर थाना कोतवाली फतेहपुर जिला फतेहपुर उत्तर प्रदेश, तोसिम बंजारा पिता बाबू बंजारा उम्र 24 साल निवासी ग्राम जलालाबाद थाना भवन जिला शामली उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार करके उनके कब्जे से एक खाली कंटेनर कीमत करीब 25 लाख रुपए का जप्त किया गया हैं।

डॉक्टर सुधांशु गर्ग की चिकित्सा महाविद्यालय में हुई नियुक्ति

नवभारत न्यूज

सलेहा/पन्ना 25 फरवरी, लोक स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा विभाग मंत्रालय भोपाल द्वारा जारी की गई चयन सूची में सलेहा निवासी डाक्टर सुधांशु गर्ग का चयन हुआ है डॉक्टर गर्ग द्वारा पूर्व में लोक सेवा परीक्षा में चयनित हुए थे।

इनका चयन मध्य प्रदेश शासन द्वारा चिकित्सा महाविद्यालय सतना में सह- प्राध्यापक संवर्ग पीडियाट्रिक्स संकाय के लिए मध्य प्रदेश शासन द्वारा नियुक्त किया गया है।श्री गर्ग सलेहा निवासी पूर्व चिकित्सा अधिकारी सतना डॉक्टर शंकर प्रसाद मनोरमा गर्ग के पुत्र हैं, डॉक्टर सुधांशु गर्ग वर्तमान में सतना

जिला चिकित्सालय में शिशु रोग विशेषज्ञ पद पर पदस्थ हैं। सलेहा नगर की जिला पंचायत सदस्य ममता शर्मा सहित, परिजनों तथा क्षेत्र वासियों ने डॉक्टर सुधांशु गर्ग को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

डाटा की चोरी कर साइबर अपराधी करते हैं लूट, सचेत एवं सावधान रहना जरूरी

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, साईबर अपराधियों के पास उन कर्मचारियों का डाटा भी पहुच जाता है। जो सेवा निवृत्त होने वाले होते हैं या हो चुके होते हैं। इसका मतलब है कि डाटा की सुरक्षा खतरे में हैं, डाटा लीकेज को रोकने की कोई गारंटी नहीं है।

वही अपराधी फिर विभिन्न तरीकों से ऐसे लोगों को लूटने का काम करते हैं। इस संबंध में पेंशन निदेशालय भी कर्मचारियों को सचेत कर चुका है।

ओटीपी साझा किया तो गये:- यदि गलती से भी ओटीपी साझा किया तो गये। कई लोग तो ऐसे

अपराधियों के मायाजाल को समझ ही नही पाते और फंस जाते हैं। जबकि पेंशनर द्वारा गलती से ओटीपी साझा करने पर अपराधी को बैंक खाते का डायरेक्ट एक्सेस कन्ट्रोल मिल जाता है। और पेंशनर के खाते की राशि फर्जी खाते में स्थानांतरित कर दी जाती है। पेंशनरों को जागरुक रह कर हमेशा सावधानी बरतने की जरुरत है। अपराधी के पास पेंशनधारक का पूरा डाटा नियुक्ति दिनांक, पीपीओ नम्बर, आधार नम्बर, सेवानिवृत्ति तिथि जैसी समस्त जानकारी उपलब्ध होने के कारण पेंशनधारकों को ऑनलाइन अपडेशन के संबंध में भरोसा दिया जाता है।

यह भी स्पष्ट किया जा चुका है कि पेंशन निदेशालय द्वारा कभी भी किसी पेंशनर का जीवन प्रमाण पत्र ऑनलाइन अपडेट करने के लिए कॉल नहीं किया जाता है और न ही ऑनलाइन जीवन प्रमाण पत्र अपडेट किया जाता है।

जबकि पेंशनर द्वारा गलती से ओटीपी साझा करने पर अपराधी को बैंक खाते का डायरेक्ट एक्सेस कन्ट्रोल मिल जाता है और पेंशनर के खाते की राशि फर्जी खाते में स्थानांतरित कर दी जाती है।

ऐसी स्थिति में ओटीपी पर भरोसा ही नहीं करना चाहिये।

फर्जी कॉल से सचेत रहना होगा

जारी दिशा निर्देशों में कहा गया है कि साइबर अपराधियों द्वारा पेंशनधारियों के जीवन प्रमाण पत्र को ऑनलाइन अपडेट करने के संबंध में की जाने वाली फर्जी कॉल से सचेत रहना होगा। अपराधी के पास पेंशनधारक का पूरा डाटा नियुक्ति दिनांक, पीपीओ नम्बर, आधार नम्बर, सेवानिवृत्ति तिथि जैसी समस्त जानकारी उपलब्ध होने के कारण पेंशनधारकों को ऑनलाइन अपडेशन के संबंध में भरोसा दिया जाता है। वर्तमान में साइबर अपराधियों द्वारा पेंशन निदेशालय का हवाला देकर पेंशनरों को पूरा डाटा बताकर जीवन प्रमाण पत्र अपडेट करने के लिए ओटीपी साझा करने की बात प्रकाश में आई है।

युवक ने घर में फांसी लगाकर की आत्महत्या

अमानगंज, पन्ना जिले के अमानगंज नगर से एक दुखद घटना सामने आई है, जहाँ वार्ड क्रमांक 10 स्थित मरही माता मंदिर के पास एक 36 वर्षीय युवक ने अपने घर में फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मृतक की पहचान कमलेश कोरी (36 वर्ष), पिता स्व. बुद्धा कोरी के रूप में हुई है। कमलेश ने बुधवार को अज्ञात कारणों के चलते अपने घर में फांसी लगा ली। जब परिजनों को घटना की जानकारी मिली, तो उन्होंने तुरंत स्थानीय पुलिस को सूचित किया। सूचना मिलते ही अमानगंज पुलिस मौके पर पहुँची और शव को अपने कब्जे में लेकर पंचनामा तैयार किया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम आज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमानगंज में कराया। फिलहाल आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की विस्तृत जांच शुरू कर दी है।

जीरो मॉडल हाईस्कूल में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व मेडल दिए गए

नवभारत न्यूज

देवेंद्रनगर/पन्ना 25 फरवरी, अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पारितोषिक व प्रमाण पत्र वितरण समारोह कार्यक्रम जीरो मॉडल हाईस्कूल देवेंद्रनगर में आयोजित किया गया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा गायत्री परिवार द्वारा आयोजित परीक्षा में कनिष्ठ वर्ग में श्रेष्ठ प्राप्तांक अर्जित करने वाले छात्र छात्राओं जिनमें शिवम कोरी पिता संजय कोरी कक्षा 6 ने प्रथम, रुद्र त्रिपाठी

पिता श्रीकृष्ण त्रिपाठी कक्षा 8 ने द्वितीय एवं सक्षम पयासी पिता शिवानंद पयासी कक्षा 6 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं सीनियर वर्ग से आदर्श पाठक पिता सुरेन्द्र पाठक कक्षा 9 ने प्रथम,शुभी जायसवाल पिता राजेश जायसवाल कक्षा 9 एवं हर्षित गुप्ता पिता उमेश गुप्ता कक्षा 9 ने द्वितीय एवं हसन मोहम्मद पिता इरफान मोहम्मद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं परीक्षा में विशेष योगदान देने पर वरिष्ठ अध्यापिका प्रेमलता मिश्रा एवं वरिष्ठ अध्यापक नरेंद्र शर्मा को प्राचार्य रमेश अग्रवाल द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कक्षाध्यापकों द्वारा प्रमाण पत्र,मैडल देकर सम्मानित किया गया।एवं सभी को शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। प्रतियोगी परीक्षा को सफल बनाने में संयोजक कंधी लाल गुप्ता गायत्री परिवार के मार्गदर्शन में सराहनीय योगदान रहा।

ग्राम पंचायत बघवार खुर्द में कागजों में बनवा दी लाखों की नाली

मामले की शिकायत मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में दर्ज कराई

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, शाहनगर जनपद अंतर्गत ग्राम पंचायत बाघवार खुर्द में पंचायत दर्पण के पोर्टल पर दर्ज लाखों रूपये के नाली एवं सीसी रोड निर्माण कार्य ने ग्रामवासियों में गुस्सा और आक्रोश फैला दिया है।

पोर्टल पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार लखन लोधी के घर से सुरेश मास्टर के घर तक सीसी रोड सह नाली निर्माण कार्य स्वीकृत और ग्राम पंचायत द्वारा क्रियान्वित दिखाया गया है। मौंके पर ग्रामीणों द्वारा निरीक्षण करने पर स्थिति बिल्कुल अलग नजर आई।

जिस स्थान पर पक्की सड़क और नाली दिखाई गई थी, वहां न तो सीमेंट कांक्रीट का निर्माण मिला और न ही किसी प्रकार की पक्की नाली।

स्थानीय निवासी आंशिक लोधी ने बताया, पंचायत दर्पण पोर्टल पर कार्य कागजों में पूर्ण दर्शा कर राशि का उपयोग किया गया। जबकि धरातल पर कोई कार्य नहीं हुआ। उन्होंने इस मामले की शिकायत मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में दर्ज कराई, लेकिन अब तक किसी अधिकारी ने मौंके पर जाकर जांच नहीं की। जिला स्तर के अधिकारी का कहना है कि लिखित आवेदन देने पर ही जांच की जाएगी। ग्रामीणों ने मांग की है कि मामले की निष्पक्ष तकनीकी जांच कराई जाए, माप पुस्तिका और भुगतान विवरण सार्वजनिक किए जाएं तथा यदि अनियमितता पाई जाती है तो जिम्मेदारों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाए।

कृषि उपज का अवैध रूप से परिवहन हुआ तो होगी एफआईआर

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, राज्य कृषि विपणन द्वारा मंडी शुल्क अपवंचन एवं फर्जी दस्तावेजों के आधार पर परिवहन के प्रकरणों पर सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं।

मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड के संज्ञान में यह तथ्य आए हैं कि कुछ व्यापारियों एवं परिवहनकर्ताओं द्वारा अधिसूचित कृषि उपज का अवैध परिवहन किया जाकर उस पर देय मंडी शुल्क का अपवंचन किया जा रहा है। कूटरचना कर फर्जी दस्तावेज जिसमें बिल, बिल्टी, अनुज्ञापत्र के माध्यम से कृषि उपज का अवैध परिवहन किया जा रहा है तथा राजस्व की चोरी की जा रही है।

कई जिलों में मिले ऐसे प्रकरण:- बताया गया है कि प्रदेश के कई जिलों में ऐसे कई प्रकरण प्रकाश में आये हैं। जहां बिना मंडी शुल्क जमा किए फर्जी दस्तावेजों के माध्यम से कृषि उपज का परिवहन किया गया है। संबंधित कृषि उपज को अभिग्रहीत कर मंडी अधिनियम की धारा 23 के तहत कार्यवाही की जाए। मंडी समितियों एवं आंचलिक कार्यालयों के उड़नदस्ता दलों द्वारा निरीक्षण के दौरान ऐसे प्रकरणों का खुलासा हुआ है। इस संबंध में निर्देशित किया गया है कि जिन मामलों में संबंधित व्यक्तियों द्वारा जानबूझकर कूटरचित मंडी दस्तावेजों में हेराफेरी की गई है तथा मंडी समिति को आर्थिक क्षति पहुँचाई गई है। ऐसे मामलों में केवल प्रशमन शुल्क लेकर कार्रवाई समाप्त करना पर्याप्त नहीं है। ऐसे मामलों में मंडी बोर्ड द्वारा सभी आंचलिक अधिकारियों तथा मंडी सचिवों को निर्देश दिये गये है कि इस तरह के मामलों में कार्यवाही करें।

जांच करने के हुए निर्देश

कृषि उपज के परिवहन के दौरान अनुज्ञापत्र के क्यूआर कोड को स्कैन कर उसकी प्रमाणिकता की जांच करने के निर्देश दिये गये हैं। कहा गया है कि फर्जी या कूटरचित अनुज्ञापत्रों के मामलों में धारा 53 के अंतर्गत प्रशमन न किया जाए बल्कि वैधानिक दंडात्मक कार्रवाई की जाए। संबंधित कृषि उपज को अभिग्रहीत कर मंडी अधिनियम की धारा 23 के तहत कार्यवाही की जाए तथा एफआईआर दर्ज कराई जाए। दोषी व्यापारियों की अनुज्ञप्ति निरस्त कर मंडी शुल्क एवं निराश्रित शुल्क की पूर्ण वसूली की जाए। मंडी बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि ऐसे प्रकरणों में किसी भी स्तर पर लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारी की जवाबदेही तय की जाएगी।

चुनाव के बाद अब गायब हो गई सरकार की चरण पादुका योजना

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, जब चुनाव आते हैं तो सरकारों का खजाना खुल जाता है। खासतौर पर महिलाओं एवं गरीबों को वोट लेने के लिये तरह-तरह के प्रयोग किये जाते हैं। पिछली विधानसभा चुनाव के पहले प्रदेश की सरकार ने प्रदेश में मुख्यमंत्री चरणपादुका योजना लागू किया था।

इस योजना के तहत तेंदूपत्ता संग्राहकों के जूते, चप्पल, साड़ी, बाटल आदि बांटे गये थे। हालांकि जूते चप्पल घटिया स्तर के बांटे जाने का विरोध भी हुआ था। किन्तु उसका कोई असर नहीं हुआ। यहा सवाल यह है कि इस योजना के नाम पर कहां कितनी राशि खर्च हुई। इसकी जानकारी कभी सार्वजनिक नही हुई। यह भी पता नहीं चला कि कहां कितने श्रमिकों को जूते चप्पल व साड़ियों का वितरण किया गया। इसके अलावा इस योजना के नाम पर कहां कितना बड़ा घोटाला हो गया। यह आज भी जांच का विषय है। चुनाव के समय यह योजना शुरू हुई थी और उसके बाद पता नहीं कहां खो गई?

पन्ना में भारी भरकम बजट हुआ खर्च:-पन्ना जिले में सरकार की चरणपादुका योजना के नाम पर सरकार द्वारा भारी भरकम राशि व्यय की गई थी। इसका प्रमाण जिला वनोपज यूनियन के आय व्यय पत्रक वर्ष 2018-19 में दर्ज है। जिसमें बताया गया है कि जूता, चप्पल, साड़ी एवं बाटल के नाम कितनी राशि व्यय की गई। यहां सवाल यह है कि जब एक जिले में इतनी राशि व्यय हुई तो प्रदेश के अन्य जिलों का हिसाब किया जाय तो पता चलेगा कि जूता चप्पल के नाम पर कई करोड़ तेंदूपत्ता संग्राहकों के नाम खर्च हो गये। किन्तु उन्हें गुणवत्ता के अनुसार जूते चप्पल भी नहीं मिले। आज उनसे पता किया जा सकता है कि जो सामग्री प्राप्त हुई थी उसकी गुणवत्ता किस तरह की थी। जांच हो तो पता चलेगा कि कहां-कहां हुआ था खेला जिस तरह से जिला वनोपज यूनियन के खाते में दर्ज किया गया है।

चरण पादुका योजना पर अभी भी है कई संदेह:- वन विभाग और वनोपज यूनियन सरकार के आदेश पर भले ही योजना को क्रियान्वित करके फुर्सत हो गया हो। किन्तु इस योजना को लेकर सवाल तब तक उठते रहेंगे जब तक इस बात का पता नहीं चल जाता कि डेढ़ करोड़ व्यय करके कितनी सामग्री क्रय की गई और कितनी सामग्री वितरित की गई।

जांच हो तो पता चलेगा कहां-कहां हुआ खेला

जूता चप्पल, साड़ी व वाटल का भुगतान उससे कई तरह के सवाल खड़े हो रहे हैं। आखिर सामग्री खरीदी किस तरह से हुई? क्या भण्डार क्रय नियमों का पालन हुआ? क्या निविदा आमंत्रित कर कम दर वाली फर्म को आदेश दिया गया। अथवा वन विभाग एवं यूनियन के अधिकारियों ने सांठगांठ कर अपने खास लोगों को आर्डर थमा दिया। यहां सवाल यह भी है कि इतनी अधिक राशि केवल खरीदी में खर्च हो गई। अथवा व्यवस्था एवं आयोजन के नाम पर भी खर्च हुई। कहीं ऐसा तो नहीं है कि खरीदी में कम खर्च किया गया हो जबकि आयोजन के नाम पर अधिक।

सरकारी अस्पतालों में ताले, डॉक्टरों के निजी क्लीनिकों में रौनक

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की स्थिति और उनके कार्यप्रणाली को लेकर कई बार सवाल उठते रहे हैं, लेकिन पन्ना में यह मामला अब और भी गंभीर हो गया है।

यहां के सरकारी अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर अपनी सरकारी ड्यूटी के बावजूद शहर भर में बड़े-बड़े निजी नर्सिंग होम और क्लिनिक चला रहे हैं, जबकि अधिकारियों द्वारा इस मामले में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही है, जिसके कारण यह मामला चर्चा का विषय बन गया है।

शहर भर में फैले निजी क्लीनिक व अस्पताल:- जिला अस्पताल एसजीएमएच सुपरस्पेशलिटी में पदस्थ कई डॉक्टरों पर यह आरोप है कि वे निजी क्लिनिक और नर्सिंग होम चला रहे हैं, जिन्हें सरकारी अस्पताल से निजी अस्पताल में मरीज को ले जाने पर सिविल संहिता उल्लंघन का नोटिस भी नहीं दिया गया है. ऐसे ही दर्जनों डॉटरों के नाम सामने आए हैं, जो सरकारी अस्पताल में काम करते हुए शहर में क्लीनिक चला रहे हैं, और यह सब प्रशासन के आंखों के सामने हो रहा है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा पर प्रभाव:- जिन डॉटरों के पास सरकारी अस्पतालों में ड्यूटी के दौरान पेशेवर जिमेदारी होती है, वे अपनी निजी प्रैक्टिस में व्यस्त रहते हुए अपनी सरकारी ड्यूटी को नजरअंदाज कर रहे हैं। इसके कारण सरकारी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर घट सकता है. मरीजों को इलाज के लिए पर्याप्त ध्यान और समय नहीं मिल पाता है, और यह स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर सीधा असर डालता है। आलम यह है कि इस मुद्दे पर स्थानीय जनता भी परेशान है और सवाल कर रही है कि प्रशासन इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए कोई कदम क्यों नहीं उठा रहा है।

क्या कहता है शासनादेश?

दरअसल, सरकार ने सरकारी डॉटरों के लिए एक स्पष्ट नियम बनाया हुआ है, जिसके तहत सरकारी कर्मचारियों को केवल अपने घर पर निजी प्रैक्टिस की अनुमति है। नर्सिंग होम और क्लिनिक चलाना उनके कार्यस्थल की शर्तों के खिलाफ है। इसके बावजूद, पन्ना जिले के कई सरकारी डॉक्टर इस नियम का उल्लंघन कर रहे हैं इस मामले में प्रशासन द्वारा कार्रवाई की बजाय इन डॉक्टरों के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है, जो इस नियम के उल्लंघन को नजरअंदाज करने के समान है. विशेषज्ञों के अनुसार, इस तरह की गतिविधियों से सरकारी अस्पतालों की कार्यप्रणाली और स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

लग्जरी कार की बजाय घोड़ी में बरात निकालने बढ़ गया फैशन

नवभारत न्यूज

पन्ना 25 फरवरी, आधुनिक शादी आयोजनों में जहां डीजे साउंड, एलईडी लाइटिंग और लग्जरी कारों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, वहीं दूल्हों की परंपरागत शान का एक हिस्सा आज भी नहीं बदला है। देवउठनी एकादशी के बाद शुरू हुआ शादी सीजन पन्ना शहर में इस बार एक बार फिर पुरानी परंपराओं को जीता-जागता दिखा रहा है।

शहरी जनजीवन में बदलाव के बावजूद दूल्हों में सफेद घोड़ी पर सवार होकर तोरण मारने की परंपरा का आकर्षण आज भी जस का तस बनी हुई है। बैंड-बाजे की धुन, बारातियों की थिरकन और दूल्हे का घोड़ी पर बैठकर निकलना - यह नजारा पन्ना की

शादियों की पहचान बना हुआ है। सफेद घोड़ी की मांग इसलिए बढ़ गई है कि इसे शुभ भी माना जाता है और स्टाइल स्टेटमेंट भी पन्ना शहर में इस बार सफेद घोड़ी की मांग सबसे ज्यादा देखी जा रही है। परंपरा के अनुसार सफेद घोड़ी को शुभ माना जाता है और माना जाता है कि इससे दुल्हे का व्यक्तित्व भी और अधिक शाही दिखता है। यही वजह है कि युवा भी लग्जरी कारों के बजाय रॉयल एंट्री के लिए घोड़ी को प्राथमिकता दे रहे हैं। घोड़ी उपलब्ध कराने वालों का कहना है कि शादी के सीजन में बुकिंग महीनों पहले से ही शुरू हो गई थी। पन्ना के कई इलाकों में एक ही दिन में दर्जनों बारातें निकलने से घोड़ी की डिमांड ज्यादा बढ़ जाती है।

शहर में सफेद घोड़ी का किराया इस समय 5000 रुपये तक पहुंच गया है। वहीं, खूबसूरत रोशनी से सजी शाही बग्घी का किराया 10,000 रुपये तक हो गया है। बग्घी व्यवसाय से जुड़े व्यवसायी बताते हैं- घोड़ी और बग्घी से बारात की रौनक बढ़ती है। लोग परंपरा और आधुनिकता के मिश्रण को पसंद कर रहे हैं, इसलिए बुकिंग लगातार बढ़ रही है। परंपरा और आधुनिकता का शानदार मेल आज के दौर में जहां युवा ट्रेंड बदलने लगे हैं, वहीं दूल्हों में करीना कार, हुंडई टक्सन, थार जैसी गाड़ियों का क्रेज भी दिखता है। लेकिन इसके बावजूद घोड़ी पर चढ़ने का रस्म अपनी अहमियत बरकरार रखे हुए है।

शादी आयोजक का कहना है

कई शादी आयोजक बताते हैं कि दूल्हे की घोड़ी पर एंट्री फोटोशूट और वीडियोग्राफी के लिए भी परफेक्ट रहती है। यही वजह है कि सोशल मीडिया और गद्य के दौर में भी घोड़ी का क्रेज कम नहीं हुआ।